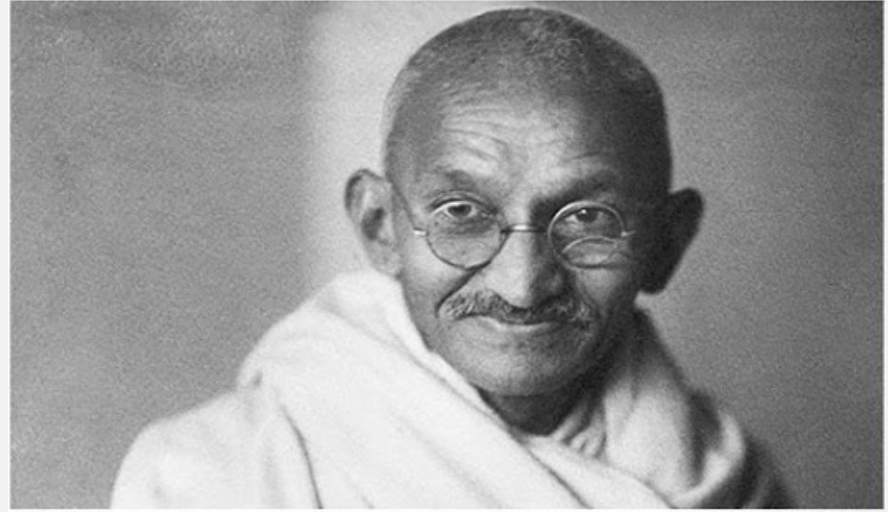


नौकर



अनु बंद्योपाध्याय

मुख्य बिंदु

गांधीजी के जीवन
पर आधारित है।

गांधीजी ने आश्रम
बनाया जिसके नियमों
सभी को मानना
अनिवार्य था।

आश्रम में सभी को
सभी कार्य करना
अनिवार्य था।

गांधीजी हरिजन और
नौकरों को अपना भाई
मानते थे।

गांधीजी के हर प्रसंग से हमें
शिक्षा मिलती है।

पाठ का सार

अनु बंद्योपाध्याय द्वारा रचित पाठ 'नौकर' गांधीजी के जीवन पर आधारित है। गांधीजी अपने आश्रम साबरमती में स्वयं बहुत से काम करते थे। आश्रम के कुछ नियम थे जो सभी को पालन करना पड़ता था। गांधीजी कभी किसी को काम करने के लिए कहते नहीं थे। गांधीजी स्वयं गेहूँ साफ करना, सफाई करना, खाना बनाना, पानी भरना, बीमारों की सेवा, पखाना साफ करना, बच्चों की देखभाल जैसे सारे काम करते। आश्रम में सभी लोग सभी तरह के काम करते। जहाँ जरूरत होती गांधीजी बिना कहे काम के लिए पहुँच जाते। वो राजनीति के काम में भी कार्यकर्ताओं की मदद करते। गांधीजी मानते थे कि वेतनभोगियों और हरिजनों की सहायता के लिए उन्हें काम पर रखना चाहिए। पाठ में हम देखते हैं कि आज जो काम हम नौकरों से कराना पसंद करते हैं गांधीजी वो सारे को खुद ही करते थे।